● सुनो और दोहराओ :

३. अपनी प्रकृति

इस कहानी में बच्चों ने अपनी प्रिय वस्तुएँ प्रकृति को देकर उसके प्रति कृतज्ञता का भाव प्रकट किया है ।

* चित्र पहचानकर उनके नाम लिखो :

नाम हमारे

....

एक दिन फ्रेड्रिक, हितेंद्र, मुख्तार, प्राजक्ता, सिद्धि, शर्मिष्ठा, कृष्णा, बिट्टू, तृप्ति, चिन्मय सोनपरी के साथ बगीचे में खेल रहे थे । काव्या पेड़ के नीचे बैठी इन सबका खेल देख रही थी कि अचानक एक पत्ता ऊपर से आ गिरा । काव्या ने ऊपर देखा, हरा-भरा पेड़ और उसकी घनी छाया फैली थी । वह सोचने लगी 'प्रकृति कितना कुछ देती है, हमें भी उसे कुछ देना चाहिए ।'

उसने सभी को बुलाया और अपने विचार बताए । सभी सोचने लगे-'अरे, हाँ हमें भी कुछ देना चाहिए ।' चिन्मय बोला, ''क्यों न बाल दिवस पर हम प्रकृति को कुछ दें,'' सभी ने सोनपरी को अपना विचार बताया ।

सोनपरी को बहुत हर्ष हुआ । वह सबको अपने साथ लेकर आकाश में उड़ चली । उसने कहा, ''नेकी और पूछ-पूछ, 'दोस्तो ! तुम जो कुछ प्रकृति को देना चाहते हो, उसकी कल्पना करो । मैं तुम्हारी हर कल्पना को सुंदर उपहार में बदल दूँगी ।'' फ्रेड्रिक और सिद्धि ने अपने खिलौने आकाश को देने का मन बनाए। सोचते ही खिलौनों ने बादलों का रूप लिया और पानी बरसने लगा ।

काव्या और हितेंद्र ने पर्वत को मिठाई देने की इच्छा व्यक्त की । यह इच्छा शानदार वृक्षों में बदल गई । शर्मिष्ठा एवं कृष्णा पृथ्वी को अपनी गुड़िया देना चाहती थीं । देखते-देखते उनकी चाह नदियाँ बनकर पृथ्वी पर बहने लगी ।

❑ कहानी में आए संज्ञा शब्दों (पर्वत, सोनपरी, सभी, खुशी, पानी) को श्यामपट्ट पर लिखें । संज्ञा के भेदों को सरल प्रयोगों द्वारा समझाएँ । उपरोक्त कृति करवाने के पश्चात विद्यार्थियों से इस प्रकार के अन्य शब्द कहलवाएँ । उनसे दृढ़ीकरण भी कराएँ । विद्यार्थियों को परी जैसी काल्पनिक संकल्पना से यथार्थ की ओर ले जाना है । उन्हें प्रश्नोत्तर के माध्यम से कहानी सुनाएँ ।

खोजबीन

रुपयों (नोट) पर लिखी कीमत कितनी और किन भाषाओं में अंकित है, बताओ।

तृप्ति और प्राजक्ता ने अपनी-अपनी चूड़ियाँ देने का मन बनाया। कुछ ही क्षणों में सारी धरती हरी-भरी हो गई मानो धरती ने धानी चुनर ओढ़ी हो। मुख्तार और बिट्टू ने अपनी रंग पेटी देनी चाही और कुछ ही क्षणों में सारा आसमान टिमटिमाते तारों से भर गया। सारी प्रकृति दुल्हन की तरह सज गई थी, जिस-जिस ने जो चाहा सोनपरी ने वह सब किया।

अब प्रकृति में पंछी मधुर स्वर में गाने लगे, कलकल झरनों ने वातावरण में संगीत भर दिया। मंद पवन बहने लगा। फूलों ने हवा में मीठी खुशबू भर दी। बच्चे खुशी से नाचने लगे और परी को धन्यवाद देने लगे कि परी ने सचमुच प्रकृति को अद्भुत बना दिया। तभी प्राजक्ता के सिर पर एक पका आम आ टपका।

एकाएक प्राजक्ता की नींद खुल गई। उसने खिड़की से बाहर झाँका तो पाया कि प्रकृति ठीक वैसी ही दिख रही है, जैसी उसने अभी-अभी सपने में देखी थी। वह भावविभोर हो गई।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

हर्ष = आनंद

क्षण = पल

अद्भुत = अनोखा

मुहावरे

नेकी और पूछ-पूछ = अच्छे काम के लिए पूछने की आवश्यकता नहीं

भावविभोर होना = आनंदित होना

भाषा की ओर

निम्नलिखित शब्दों के समानार्थी शब्द कहानी से ढूँढ़कर बताओ।

आकाश

मित्र

धरा

गिरि

सुगंध

सुनो तो जरा

कार्टून कथा सुनकर उसे हाव-भाव सहित सुनाओ ।

बताओ तो सही

बड़े होकर क्या बनना चाहते हो ?

वाचन जगत से

महादेवी वर्मा के रेखाचित्र पढ़कर उसके पात्रों के नाम लिखो ।

मेरी कलम से

इस कहानी के किसी एक अनुच्छेद का अनुलेखन करो ।

* किसने किससे कहा है बताओ :

१. ''प्रकृति कितना कुछ देती है ।''

२. ''मैं तुम्हारी हर कल्पना को सुंदर उपहार में बदल दूँगी ।''

३. ''बाल दिवस पर हम प्रकृति को कुछ दें ।''

४. ''नेकी और पूछ-पूछ ।''

सदैव ध्यान में रखो

प्रकृति से हमें देने की सीख मिलती है ।

जरा सोचो .... बताओ

यदि तुम्हें परी मिल जाए तो .....

अध्ययन कौशल

किसी परिचित अन्य कहानी लेखन के लिए मुद्दे तैयार करो ।

विचार मंथन

।। साइकिल चलाओ, पर्यावरण बचाओ ।।

स्वयं अध्ययन

दिए गए चित्रों के आधार पर उचित और आकर्षक विज्ञापन तैयार करो ।